ISSN No. : 2394-0344 **REMARKING :** VOL-1 * ISSUE-5*October-2014

क्रान्तिकारी आन्दोलन में विजय सिंह पथिक का योगदान

मनबीर सिंह
मिहिर भोज कॉलेज दादरी
गौतम बुद्ध नगर (उ0प्र0)

सारांश

राजस्थानकेशरी, बिजौलिया किसान सत्याग्रह के सफल संचालक, लेखक, पत्रकार, सम्पादक, बहुभाषाविद, रियासती जनता के प्रसंग को कांग्रेस के कार्यक्रमों में सम्मिलित कराने वाले विजय सिंह पथिक का बचपन का नाम भूपसिंह राठी था। स्वतंत्रता आन्दोलन में उनका प्रवेश एक क्रान्तिकारी के रूप में हुआ। विजयसिंह पथिक एक सम्पूर्ण क्रान्तिकारी थे। वे विचार, कार्यान्वित और नेतृत्व तीनों गुणों से सम्पन्न थे। उनका क्रान्तिकारी जीवन शचीन्द्र सन्याल और रास बिहारी बोस के नेतृत्वों में आरम्भ हुआ। अनुशीलन समिति के सदस्य के रुप में विधिवत रुप से क्रान्तिकारी जीवन की शुरुआत की। उनका आरम्भिक कार्यक्षेत्र बंगाल भूमि रहा। जिलाधीश किंग्सफोर्ड और गवर्नर फ्रेजर के साथ हुई क्रान्तिकारी घटनाओं में विजयसिंह पथिक ने मुख्य भूमिका निभाई। मणिकतल्ला में गिरफ्तारी तथा नरेन्द्र गोसाईं की हत्या के लिए जेल में रिवॉलवर पहुंचाना उनके जीवन की दूसरी प्रमुख घटना रहीं। 1908 में कलकत्ता बैंक डकैती और सरकारी वकील विश्वास को गोली मारना इनके अन्य प्रमुख कार्य रहे।

शचीन्द्र सन्याल के अखिल भारतीय स्तर पर एक साथ क्रान्ति फैलाने के लिए, राजस्थान से हथियारों को एकत्रित करना, निर्माण करना और मरम्मत करने का जिम्मा विजयसिंह पथिक का ही था। इस कार्य हेतु पथिक ने 1911 तक राजस्थान में वीर भारत तथा अनुशीलन भारत नामक दो क्रान्तिकारी संगठनों की शाखाओं की स्थापना कर दी थी।

क्रान्तिकारियों के बनारस सम्मेलन में भाग लिया तथा 1916 में एक साथ होने वाली अखिल भारतीय क्रान्ति का आरम्भ करने के लिए राजस्थान के ब्यावर तथा नसीराबाद छावनी पर आक्रमण का जिम्मा पथिक का ही था। पूरी तैयारी थी परन्तु मुखबिर की खबर से क्रान्ति का भारत में शुभारम्भ नहीं हो सका और एक महान प्रयास असफल हो गया। क्रान्तिकारी संगठन छिन्न–भिन्न हो गये तथा पथिक ने आजादी का दूसरा रास्ता अपनाया और प्रेस, शिक्षा, सत्याग्रह तथा रियासती जनता के प्रश्नों के लिए आजीवन संघर्ष किया। प्रस्तुत शोध पत्र में राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली, राजस्थान राज अभिलेखागार, बीकानेर से प्राप्त मौलिक शोध सामग्री, विजय सिंह पथिक के जीवनी लेखक डॉ0 शंकर सहाय सक्सेना के ग्रन्थों एवं पदम सिंह वर्मा की पुस्तक 'क्रान्तिकारी विजय सिंह पथिक' तथा सुमनेश जोशी के ग्रन्थ 'राजस्थान के स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी' जैसे ग्रन्थों के अवलोकन में विजय सिंह पथिक (भूप सिंह राठी) की क्रान्तिकारी गतिविधियों को प्रस्तुत करने का प्रयास है।

मुख्य शब्द : क्रान्तिकारी, स्वतन्त्रता, सैद्धान्तिक, देशभक्ति, ब्रिटिशराज, देशी राज्य,

प्रस्तावना

देशभक्ति और क्रान्ति के तत्व भूपसिंह के रक्त में रचे–बसे थे। पिता और माता दोनों के परिवार का देशभक्ति और बलिदानों से गहरा रिश्ता था। अपने बहनोई से उन्होंने जो वन विभाग में एक अधिकारी थे, इन्दौर निवास के दौरान बन्दूक और रिवाल्वर चलाना सीख लिया था। सूबेदार बलदेव सिंह जो स्वयं बड़े देशभक्त थे और होल्कर के राज्य इन्दौर में ही रह रहे थे, भूपसिंह के दूर के रिश्ते के चाचा थे और वे ही क्रान्तिकारी भूपसिंह के प्रथम संरक्षक और गुरू थे। इन्दौर में सूबेदार साहब का घर क्रान्तिकारियों का अड्डा बन गया जिसमें भूपसिंह पूरी तल्लीनता के साथ कार्यरत रहते थे।

सन् 1905 में इन्दौर में ही प्रसिद्ध क्रान्तिकारी शचीन्द्र सन्याल से भूपसिंह की भेंट हुई।[1] शचीन्द्र सन्याल ने उनकी भेंट रासबिहारी बोस से करायी और भूपसिंह अनुशीलन समिति के क्रान्तिकारी सदस्य बन गये। सन् 1907 में क्रान्तिकारी कार्यों के प्रशिक्षण के लिए ढाका भी गये।[2] वहीं से युगान्तर अखबार में काम किया और उनके मुख्य सम्पादकों में से एक बन गये।

क्रान्तिकारी सरकारी मशीनरी को नुकसान पहुँचाते थे। क्रान्तिकारियां ने ब्रिटिश राज्य का तख्ता पटलने के लिये 6 सूत्रीय कार्यक्रम बनाया।

1. प्रेस के द्वारा जोरदार प्रचार के जरिये शिक्षित वर्ग में ब्रिटिश राज्य के प्रति घृणा की भावना पैदा करना।
2. देश के शहीदों की जीवनियों को संगीत और नाटक के द्वारा लोगों समक्ष प्रस्तुत करके मातृभूमि के प्रति जागृत करना।
3. जलसे, जुलूस, हड़ताल करके शत्रु को व्यस्त रखना।
4. सैनिक शिक्षा, व्यायाम, धार्मिक कार्यक्रम आदि के लिये युवकों को तैयार करना।
5. हथियार प्राप्त करना जिस तरीके से भी हो सके।
6. चंदे और डकैती के जरिये पैसा इकट्ठा करना। क्रान्तिकारियों में इस समय दो विचार धारायें थी और उनके क्रियाकलापों के दो केन्द्र थे। कुछ नेता अंग्रेजो के विरूद्ध सशस्त्र आन्दोलन करने के लिये भारतीय सेना की और यदि सम्भव हो तो अंग्रेजों के विदेशी शत्रुओं से भी सहायता लेने का प्रयास करते थे। दूसरी विचारधारा के नेता देश में हिंसात्मक कार्यक्रम जैसे की ब्रिटिश अफसरों पुलिस और क्रान्तिकारी नेताओं के विरूद्ध सूचना देने वाले लोगों को समाप्त करने की नीति में विश्वास करते थे।

क्रान्तिकारियों का विश्वास वन्दे मात्रम में छपे इस लेख से स्पष्ट है–''हिन्दुस्तानी और अंग्रेज हर तरह के सरकारी अधिकारी को आतंकित किये रहो और तब अत्याचार के समुचे तंत्र का विनाश समीप होगा..... अलग–अलग हत्याओं का तरीका अफसरशाही को क्रियाहीन और लोगों को जगाने का सबसे कारगार सम्भव तरीका है।''[3] क्रान्तिकारी अंग्रेजो का धन लूटते थे और उन अधिकारियों की हत्या करते थे जो भारतीयों का दमन करते थे। क्रान्तिकारियों की सूची में ऐसे ही अधिकारी बंगाल का गर्वनर फ्रेजर तथा कलकत्ता का जिलाधीश किंग्सफोर्ड थे। फ्रेजर की स्पेशल रेलगाड़ी को बम से उड़ाने का असफल प्रयास किया जिसमें बम से रेलगाड़ी पलटी नहीं वरन् पटरी से उतर गयी। इस कार्य में भूपसिंह मुख्य भूमिका में थे।[4]

स्थानान्तरण के बाद मुज्जफरपुर (बिहार) में गये किंग्सफोर्ड की हत्या का काम खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी को सौंपा गया। 30 अप्रैल 1908 को किंग्सफोर्ड के बंगले से आती फुल्टन कार को निशाना बनाया गया जिसमें दो अंग्रेज महिला मारी गयीं। अनुमान लगाया गया था कि उस गाड़ी में किंग्सफोर्ड हैं क्योंकि उनकी कार भी वैसी ही थी। इसके प्रतिक्रियास्वरूप सरकार ने तलाशी अभियान तेज कर दिया और 1908 को बारीन्द्र घोष के मणिकतल्ला बाग पर छापा मारा जो क्रान्तिकारियों का प्रशिक्षण केन्द्र के साथ–साथ शस्त्र भण्डार का केन्द्र भी था। भारी गोला–बारूद और हथियारों सहित 36 क्रान्तिकारी पकड़े गये। इनमें भूपसिंह भी एक थे।[5]

इनमें कुछ को फाँसी दे दी, कुछ को कालेपानी की सजा में भेज दिया गया और कुछ जमानत पर छूट गये। भूपसिंह पर कोई अपराध सिद्ध नहीं हो सका और वे छूट गये। नरेन्द्रनाथ गोस्वामी सरकारी गवाह बन गये। क्रान्तिकारी कानून में गद्दार के लिए सजा सिर्फ मौत होती है और यह कार्य अलीपुर जेल में बन्द सतेन्द्र कुमार तथा कन्हाईलाल को सौंपा गया। भूपसिंह बिहारी मजदूर के रूप में फिर से जेल गये और दोनों को रिवाल्वर उपलब्ध करायी।[6] नरेन्द्रनाथ गोस्वामी की हत्या कर दी गयी। सतेन्द्र कुमार को उसकी सजा में फाँसी लगाकर उसका शव जेल में ही फूँक दिया गया। क्रान्तिकारियों में विद्रोह की लहर दौड़ पड़ी, विरोधस्वरूप विभिन्न स्थानों पर बम फेंककर सरकार को आतंकित किया गया। ग्रेस्ट्रीट (कलकत्ता) में भूपसिंह ने बम फेंका।[7]

2 जून 1908 को कलकत्ता में बैंक डकैती डाली गयी। भूपसिंह ने पहरेदार सहित चार लोगों को गोली से मार दिया।[8] अलीपुर जेल के सरकारी वकील विश्वास को 10 फरवरी 1909 में बसु तथा भूपसिंह ने गोली मार दी बसु पकड़े गये परन्तु भूपसिंह भागने में सफल रहे।[9] इसके बाद डिप्टी सुपरिडेटेन्ड जो इस मुकदमे की पैरवी कर रहा था, को भूपसिंह ने गोली से मार दिया।[10]

भूपसिंह बम बनाने, हथियार चलाने, आतंकित क्रान्ति की सैद्धान्तिक और प्रायोगिक शिक्षा लेकर एक सम्पूर्ण क्रान्तिकारी बन गये थे। धन संचय के लिए सरकारी डाँके, राजनैतिक हत्याएं, सरकार के दमन का प्रतिशोध तथा हथियारों को जिस विधि से प्राप्त किया जा सके उनके लक्ष्य बन गये थे। शचीन्द्र सन्याल जो अखिल भारतीय स्तर पर क्रान्तिकारी संगठनों के कार्य में संलग्न थे, उन्होंने राजस्थान में इसका जिम्मा भूपसिंह को सौंपा। 1911 तक भूपसिंह ने राजस्थान में वीर भारत सभा तथा अभिनव भारत नामक दो क्रान्तिकारी संगठनों की शाखाएं स्थापित कर ली थी।

इसी समय ब्रिटिश सेना में तोड़ेदार बन्दूकों के स्थान पर दूसरी बन्दूकें आ गयी। जिससे उनकी उपयोगिता कम हो गयी। धीरे–धीरे उनके कातूस भी मिलने बन्द हो गये जिससे उनकी कीमत और कम हो गयी। क्रान्तिकारियों के लिए सबसे बड़ा कठिन कार्य हथियार प्राप्त करना ही था जिसकी उनको सबसे ज्यादा आवश्यकता थी। देशी रियासतों में ब्रिटिश भारत की तुलना में हथियार खरीदना या प्राप्त करना आसान था। भूपसिंह को राजस्थान उसी उद्देश्य के लिए भेजा गया ताकि वह तलवार, भाले, करछी और बन्दूक आदि एकत्रित करके क्रान्तिकारियों के पास भेज सके।[11]

अपनी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए भूपसिंह ने अजमेर में रेलवे वर्कशॉप में नौकरी कर ली। वहीं पर रहकर पुरानी तोड़ीदार बन्दूकों की मरम्मत करनी सीख ली तथा उसके खाली कारतूसों को भरना भी सीख लिया तथा वर्कशॉप के सुखदीन मिस्त्री को अपने प्रभाव में लाकर क्रान्तिकारी दल का सदस्य बना लिया।[12] भूपसिंह राजस्थान में एक अस्त्र–शस्त्रों का कारखाना भी खोलना चाहते थे।[13] रास बिहारी बोस राजस्थान के कई देशी राजाओं के सम्पर्क में थे और क्रान्ति में उनकी सहायता प्राप्त करना चाहते थे। इसी कार्ययोजना पर भूपसिंह को भी काम करने को कहा गया। भूपसिंह ने कई राज्यों के राजाओं से सम्पर्क किया और उनसे अच्छे सम्बन्ध स्थापित कर लिये। वे स्वयं खारवा ठाकुर गोपाल सिंह के निजी सचिव बन गये।[14] और उनके साथ मिलकर क्रान्तिकारी गतिविधियों को आगे बढ़ाया।

1912 में दिल्ली को भारत की राजधानी बनाया गया। औपचारिक उद्घाटन समारोह में वायसराय का जुलूस निकाला जाना था। भारतीय क्रान्तिकारियों ने इसको अपना निशाना बनाना तय किया। दिसम्बर 1912 को जब

वायसराय का जुलूस चांदनी चौक से गुजरा उस समय रासबिहारी बोस, शचीन्द्र सान्याल, यशपाल, विश्वास, बसन्त कुमार, प्रतापसिंह, अमीचन्द तथा भूपसिंह ने वायसराय के ऊपर बम फेंका। वायसराय तो बच गया परन्तु उसका अंगरक्षक मारा गया। दिल्ली षडयन्त्र करने में अनेक क्रान्तिकारी जेल गये तथा सजायें सुनाई गयी। भूपसिंह बचकर निकल गये।[15]

दिसम्बर 1914 में भारत के समस्त क्रान्तिकारियों का सम्मेलन बनारस में हुआ। इसे बनारस योजना के नाम से जाना जाता है। रासबिहारी बोस ने भारतीय फौजियों से मिलकर समस्त उत्तर भारत में एक साथ क्रान्ति की योजना बनाई। फिरोजपुर, लाहौर और रावलपिण्डी जो उस समय के बड़े शस्त्रागार थे उन पर भारतीय फौजियों द्वारा नियंत्रण के साथ क्रान्ति के आरम्भ की योजना बनाई गयी।[16] भूपसिंह को बयावर और नसीराबाद की छावनियों पर आक्रमण का जिम्मा सौंपा गया।[17]

योजना की तिथि 21 फरवरी 1915 तय की गयी। 31 जनवरी तक सारी तैयारी पूरी कर ली गयी। 3000 से ज्यादा बन्दूक और बहुत सा गोला बारूद एवं अनेक क्रान्तिकारी भूपसिंह ने एकत्रित कर लिए। 21 फरवरी को होने वाली क्रान्ति मुखबिर द्वारा सरकार को सूचना देने के कारण असफल हो गयी। किसी अगली कार्यवाही से सावधान भूपसिंह ने क्रान्ति असफल होते ही एकत्र अस्त्र–शस्त्र और क्रान्तिकारियों को व्यवस्थित किया और अन्य अस्त्र–शस्त्रों को तथा गोला–बारूद को गुप्त स्थानों पर छिपा दिया और क्रान्तिकारी सैनिकों को बिखर जाने का आदेश दिया।[18]

जैसी आशा थी कि ब्रितानी सेना गिरफ्तार करने आ गयी। भूपसिंह एवं ठाकुर गोपाल सिंह को गिरफ्तारी की सूचना पहले ही मिल गयी थी। बन्दी बनकर रहने या फांसी पर लटककर मरने से बेहतर है कि अंग्रेजों से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हों, का प्रस्ताव भूपसिंह ने रखा जिसे सब साथियों ने स्वीकार कर लिया। सामान्य सब साथियों को हटा दिया गया तथा भूपसिंह, ठाकुर गोपाल सिंह, मोठ सिंह, रलिया राम और सवाई सिंह पांचों ने बहुत से हथियार और और खाने–पीने की चीजें लेकर खारवा के गढ़ से निकलकर रातों–रात दूर जंगल में अपना ओंहदी (शिकारी बुर्ज) बनाकर वहां मोर्चाबन्दी की।[19]

पीछा करता हुआ अंग्रेज कमिश्नर 500 सैनिकों की टुकड़ी के साथ शिकारी बुर्ज पर आ धमका। उसने यथासंभव उनको आत्मसमर्पण का प्रयास किया परन्तु असफल रहा और आक्रमण भी न कर सका। उसे स्थानीय जनता के विरोध का भय था साथ ही साथ क्रान्ति के विस्तार का भय सता रहा था और उसे किसी भी कीमत पर गोली चलाने की अनुमति न थी।[20]

अन्त में सम्मानजनक समझौता 25 जून 1915 दोनों पक्षों के बीच हो गया,[21] जिसमें भूपसिंह और उसके साथियों को टाटगढ़ के किले में नजरबंद कर दिया गया। उनको आवश्यक हथियार रखने तथा शिकार खेलने की छूट मिल गयी तथा 3 मील तक कोई सैनिक या फौज नहीं रहेगी। तहसीलदार की निगरानी में उनको रखा गया।[22]

इस समझौते के कुछ दिन बाद ही सोमदत्त नामक मुखबिर की सूचना पर भूपसिंह का नाम प्रथम लाहौर षडयन्त्र केस में आ गया। लाहौर से तुरन्त भूपसिंह को गिरफ्तार करने का वारंट टाटगढ़ आ गया। इसके टाटगढ़ आने के पूर्व ही भूपसिंह को उसकी सूचना मिल गयी और भूपसिंह वेश बदलकर पहरेदारों से छिपकर घने जंगल में जा छिपे। घटना 10 जौलाई 1915 की है।[23]

लम्बी थकान और जंगली जानवर से घायल भूपसिंह ने अपने चार साथियों को टाटगढ़ के किले से नजरबंदी से बाहर निकालने का सफल प्रयास किया। सरकारी भय से कोई देशी राजा सहायता को तैयार न हुआ। टाटगढ़ के राजा से बलपूर्वक संसाधन जुटाकर अन्य साथियों को नजरबंदी से मुक्त कराया और सब अलग–अलग जगह चले गये।[24]

क्रान्ति की असफलता के बाद उनके क्रान्ति के साथी बिछड़ गये थे। रास बिहारी बोस विदेश चले गये। कुछ को कालेपानी तथा लम्बी जेल की सजा हो गयी। देशी राजा अंग्रेजों के भय के कारण उनको सहायता नहीं दे रहे थे। संसाधन और हथियार भी इधर–उधर हो गये थे। अब क्रान्ति को पुर्नसंगठित करना संभव न था। अब वे नये मार्ग की खोज में थे।[25]

इस समय तक भूपसिंह राजस्थान में बहुचर्चित हो गये थे। ब्रिटिश सरकार उनको हर कीमत पर गिरफ्तार करना चाहती थी। अपने मूल नाम और वेषभूषा में किसी भी समय गिरफ्तारी का भय बना हुआ था। देशभक्त और कभी न थकने वाला योद्धा अंग्रेजों की सत्ता और देशी जनता के शोषण का विरोधी बन गया। अब वह गुमनाम जीवन नहीं बिता सकता था। अतः गिरफ्तारी न हो और साम्राज्यवाद और शोषण से भयभीत जनता को मुक्त कराने के महायज्ञ के लिए भूपसिंह ने अपनी दाढ़ी बढ़ा ली, साधु का वेश धारण कर लिया और नाम बदलकर विजयसिंह पथिक रख लिया।[26]

भूपसिंह निर्भीक और विषम परिस्थितियों में भी न टूटने वाला योद्धा था। टाटगढ़ से निकलकर जंगल में भटक गये। दिन भर तेजी से चलने और भोजन न मिलने के कारण सघन वन में आराम करते समय सो गये। यहीं जंगली जानवर ने उन पर आक्रमण कर दिया। भूपसिंह ने उससे अपनी प्राणरक्षा की और उसे गोली से मार गिराया परन्तु जंगली जानवर के द्वारा घायल हो गये थे और उनको भारी पीड़ा हो रही थी। प्रातः वह आश्रय की तलाश में जंगल में एक वृद्धा की कुटिया में पहुँचे। अनुमान के आधार पर ही उस वृद्धा ने भूपसिंह को पहचान लिया था। उसे भोजन कराया और घाव की मरहम–पट्टी की और अपने सीमित संसाधनों से एक घोड़ा उपलब्ध कराया। ब्रिटिश सरकार भूपसिंह को गिरफ्तार करने के लिए अथक प्रयास कर रही थी परन्तु सफलता नहीं मिली। देशी राजा भी अंग्रेजों के भयवश भूपसिंह से दूरी बनाये हुए थे।

आश्रय की तलाश में भूपसिंह गुरला गाँव पहुँचे। गुरला के जमींदार ने उनको आश्रय दिया और अपने रनिवास में उनको छिपाकर रखा तथा स्वस्थ होने तक वहीं रहे। इसके बाद कुछ समय तक भिनाय में एक साधु के रूप में रहे। साधु के वेश में पथिक की गतिविधियों से आसपास के लोग आकर्षित होने लगे और उस क्षेत्र के प्रतिष्ठित लोग भी सम्पर्क में आने लगे। बढ़ती ख्याति से नये साधु (पथिक) की चर्चा घर–घर में होने लगी। साधु वेशधारी पथिक को संदेह हो गया कि ब्रिटिश सरकार ने उन्हें पहचान लिया है इसलिए उन्होंने भिनाय की साधु की

कुटिया का त्याग कर दिया। वहां से मेगंटिया गये तथा फिर कांकरोली गये जहां उनको एक छोटा सा क्रान्तिकारी कार्यकर्ताओं का समूह मिल गया। इन क्रान्तिकारियों के आग्रह पर वे ककंरोली के पास भाणा गांव पहुँचे।[27] भाणा में पथिक जी ने एक पाठशाला की स्थापना की।[28]

तथा भाणा में रहते हुए ही उनकी मोही के ठाकुर डूंगर सिंह भाटी और मेगंटिया निवासी ईश्वरदास आसिया से घनिष्ठता बढ़ी जिन्होंने उनका आन्दोलन के समय महत्वपूर्ण सहयोग किया। पथिक जी के मार्गदर्शन में काकंरोली में बढ़ती सरकार विरोधी गतिविधियों के कारण गुप्तचरों का भाणा गांव आना–जाना ज्यादा हो गया तो पथिक को कांकरोली छोड़कर मोही जाना पडा। वहां एक पाठशाला की स्थापना की। कुछ समय वहां रहकर सुरक्षित स्थान की तलाश में जहाजपुर पहुँचे और एक पाठशाला की स्थापना की। यह स्थान भी सुरक्षित सिद्ध नहीं हुआ। अतः वहाँ से चित्तौड़ चले गये। चित्तौड़ से ओछड़ी गांव आकर रहने लगे तथा लगभग सवा साल तक अज्ञातवास यहीं बिताया। चित्तौड़गढ़ में पथिक जी ने विद्या प्रचारणी सभा की स्थापना की[29] तथा इसके द्वारा देशभक्तों की फौज खड़ी की। विद्या प्रचारणी सभा को देखकर दूसरी जगह भी ऐसी संस्थाएं बनी।

संदर्भ सूची

1. राज0 रा0 अभि0 बीकानेर 1972, पृ0सं0 60
2. वर्मा डॉ0 पदम सिंह, विजय सिंह पथिक, प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली1992 पृ0सं0 08
3. देसाई ए0आर0, भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि नई दिल्ली 2009 से उद्‌धत पृ0सं0 273
4. वर्मा डॉ0 पदम सिंह पूर्वोक्त पृ0सं0 11
5. वर्मा डॉ0 पदम सिंह पूर्वोक्त पृ0सं0 10
6. वर्मा डॉ0 पदम सिंह पूर्वोक्त पृ0सं0 10
7. वर्मा डॉ0 पदम सिंह पूर्वोक्त पृ0सं0 11
8. वर्मा डॉ0 पदम सिंह पूर्वोक्त पृ0सं0 11
9. वर्मा डॉ0 पदम सिंह पूर्वोक्त पृ0सं0 12
10. वर्मा डॉ0 पदम सिंह पूर्वोक्त पृ0सं0 12
11. शर्मा डॉ0 गोपीनाथ, बीकानेर अभिलेख, राजकीय मुद्रणालय, बीकानेर, 1987, पृ0सं0 182
12. शर्मा डॉ0 गोपीनाथ, पूर्वोक्त, पृ0सं0 182
13. जोशी सुमनेश, राजस्थान में स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी, ग्रन्थागार जयपुर पृ0सं0 23
14. राज0 रा0 अभि0 बीकानेर कान्फीडेन्शियल आर्मस्ट्रोग रिपोर्ट 15–04–1914, राज0 रा0 अभि0 राजपूताना रेजेन्सी रिपोर्ट फाइल नं0 51, भाग नं. 1
15. शर्मा डॉ0 बी0 के0, राजस्थान में किसान एवं आदिवासी आन्दोलन, राज0 हि0 ग्र0 अ0 जयपुर, 2001पृ0सं0 61 रा0 अभि0 नई दिल्ली, होम पो0 जुलाई 1915 फ0 न0 515–29
16. शर्मा डॉ० बी0 के0 पूर्वोक्त पृ0 सं0 61
17. राज0 रा0 अभि0 बीकानेर 1973 सबरलाल का बयान कान्फीडेन्सियल रिकार्ड फ0 न0 4, सक्सेना एवं शर्मा बिजौलिया किसान आन्दोलन का इतिहास, राजस्थान साइन्टिफिक पब्लिशर्स जयपुर पृ0सं0 60–61 (डॉ0 शंकर सहाय सक्सेना प्रमुख अर्थशास्त्री और इतिहास लेखक हैं, डॉ0 सक्सेना विजय सिंह पथिक की जीवनी के लेखक हैं)
18. रा0 अभि0 नई दिल्ली, फोरेन एण्ड पालीटिकल सीक्रेट 1 मार्च 1917 फाइल नं0 29, सक्सेना शंकर सहाय पूर्वोक्त 104–105
19. रा0 अभि0 नई दिल्ली, फोरेन एण्ड पोलिटिकल डिपाटमेंट सीक्रेट, 1 मार्च 1917 फाइल नं0 1–29
20. शर्मा डॉ0 गोपीनाथ पूर्वोक्त पृ0सं0 184
21. सक्सेना सहाय एवं शर्मा पूर्वोक्त पृ0सं0 61
22. सक्सेना शंकर–पालिटिकल मूवमेंट एण्ड एवेकिंग इन राजस्थान पृ0सं0 138, रा0 अभि0 नई दिल्ली, फोरेन एण्ड पालिटिकल सीक्रेट मार्च 1917, फाइल नं0 1–29
23. वर्मा डॉ0 पदम सिंह पूर्वोक्त पृ0सं0 17
24. जोशी सुमनेश पूर्वोक्त पृ0 सं0 21
25. जोशी सुमनेश उपरोक्त,पृ०सं० 26
26. सक्सेना एवं शर्मा पूर्वोक्त पृ० सं० 62
27. राजपुरोहित डॉ० कन्हैयालाल, स्वाधीनता संग्राम में राजस्थान की आहूतियां, 1803–1941, साईन्टिफिक पब्लिशर्स, जयपुर, 1993, पृ०सं० 193
28. सक्सेना एवं शर्मा पूर्वोक्त पृ०सं० 63।